इ. वि. का. राजवाडे संशोधन मंडळ धुळें.

—: हस्त लिखित ग्रंथ संग्रह :—

ग्रंथ क्रमांक ४३४/ने ४४९(४०५)

ग्रंथ नाम योग वासिष्ठ सार

विषय म० वेदांत

" Joint project of the Rajwade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai."

सं.नं. ~~९~~ १०

वेदांत

मराठी

माधवदास - योगवासिष्ठसार

~~४३४ वे: १०१~~ रु॰॥८ २३७ वे १०१

१।१९०

टीका॥आत्मा जेथे अधिष्ठान॥ते आध्यात्मविद्या निश्चीत॥यापासो
नि विवेकयुक्त उपजत॥तोचि आध्यात्मविचारू॥२१॥यालागी विच
राचे आंग निश्चीतु॥आध्यात्मविद्या बोलीजेत॥जो अध्यात्मविचारु
याते ज्ञानत॥ज्ञान ऐसे ल्हनवे सत॥२०॥एवं ज्ञाने आनी आध्यात्मवि
(1) चारू॥येकरूप चि हा निर्धारू॥परी अभीनन यथीचा प्रकारू॥सा
नाच्या पोटी असे यज्ञ असे॥२१॥दुग्धामाजी सरी माधुरी॥असे गुढ तेजे
य परी॥तैसे सुज्ञानाचे उदरी॥[illegible] सेन मे मान॥२२॥ज्ञाने संपया
लागी प्रवर्तले॥तव ज्ञेय स्वरुप ज्ञाना [illegible] पोटी आले॥मग ज्ञान ही ज्ञान
पना मुकले॥ऐसे उरले ज्ञेय न ज्ञाना॥२३॥एवं ज्ञेय स्वादर्शने॥
यत्नी पुढीचे जेथ हरन॥जे पुर्विं केले निरोपन॥मुख्य सीमन नाश
ले जेथ॥२४॥श्लोक॥विचारेन परीज्ञातं॥स्वभावस्योदितात्मनः॥
अनुकंप्याभवं तिह ब्रह्मा विष्णु सवादयः॥४॥टिका॥

Joint project of the Rajwade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yeshwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

ऐसे अध्यात्मविचारें ॥ परीक्षा न होता निर्धारें ॥ ज्ञान निरसो निश्च
ध्यात्मतुरें ॥ जे स्वभावे सदोदीत ॥ ३५ ॥ द्रष्टव्य जरी नीरसले ॥ त
ली दृश्यवने पन असे सेचले ॥ एवं सहज प्रकारे विनुळले ॥ संसार ज्ञान
(२) जे कांही ॥ ३६ ॥ येने स्वभाव सदा उदीत ॥ स्वभावो निस्वभाव सदोदीत ॥
सर्वैसी परीस नौ तिसा ॥ व्यतिरेक आत्मा निरन्वये ॥ ३७ ॥ ऐसा विचारू
परीक्षान ॥ स्वभावो ही तो आत्मा ॥ जो आपन ॥ तो जगद्गुरू श्रीनारायेन ॥
त्रीभुवनवंद्य निश्चये ॥ ३८ ॥ ब्रह्मा विस्नु महेश्वर ॥ इंद्र मुख्य करूनि
सुरवर ॥ ज्यासे करीति नमस्कार ॥ होउनि किंकर द्वारी नयेति ॥ ३९ ॥
तो सद्गुरु माहाराज जरी ॥ ज्याचा द्वार भोग नलावरी ह्रपा करी ॥ हात ठे
२ यि मस्तकावरी ॥ ये कूटी थोरी नया च्चि ॥ ४० ॥ असो परब्रह्म जो ३
परिपुर्ण ॥ तो वनी बा काय म्हुनोन ॥ परंतु पावावया होनि वोन ॥
मुख्य कारन विच्यारू ॥ ४१ ॥ विच्यारापासुनि येथवरी ॥ सो पाव

Joint project of the Rajwade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

(2A)

भाकवनेपरी॥ हेमागुतेश्रीरामाअनधारी॥ सागीजेठपुठी
लीयाश्लोकी॥४२॥ श्लोक॥ कीमीदंविस्वमखीलं॥ किंस्यामहमिति
स्वयं॥ विचारनिरतस्येवमसदेवभवेज्जगत्॥५॥ टीका॥ हेवि
स्वतेकायेसमस्तःमीत्तोदेहीयुवननवर्तते॥ ऐसानियतजोविचार
निश्चीत॥ जगहेअसत्यहोयसात्ते॥४३॥ विचारेआपनाते पाहे
जाये॥ तवस्वयेअविनाशपनआहे॥ मगअसद्रूपदेखताहो
ये॥ जगहेचराचरास्तक॥४४॥ जगहेअवघेअसंत॥ मीब्रम्हस्व
रूपसंत॥ ऐसेदेखताउपजेनिश्चीत॥ सर्वब्रम्हहेभावना॥४५
श्लोक॥ यस्यमोरव्येक्षयंयातं सर्वब्रम्हेतिभावनात्॥ नोदेतिवा
सनात्तस्यभावनांबुमतिमरेत्॥६॥ टीका॥ सर्वब्रह्मसंभावनेचे
निगुंजे॥ सुरेसंतोसंतविभागुदेखने॥ भेददृष्टीजेति॥ तेचित्तमन
ने॥ मोस्वयेयेसेनिर्धारे॥४६॥ तरीसंतासंतमौनजेकालीभासले॥

Joint property of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

तेय परीयेंत मो स्वपन चि पावले ॥ असो ते मोरव्ये ध्यानेठे ॥ सर्व
पं ब्रह्मयें भावनें ॥४७॥ एवं सर्वब्रह्मभावनना भावितां ॥ ब्रह्म सर्वत्र भासे
न तेत्ता ॥ या उपरी विज्ञाय हेवा तो ॥ बोलो चि न येसर्वोत्मेनो ॥४८॥ लो
(3) पजालीया विज्ञायभावना ॥ कोणे विरु पजेल वासना ॥ स्वर्नाकारें र
घुनंदना ॥ ब्रह्मचि पुर्नकोंदाटले ॥४९॥ तस्मात् सर्वब्रह्मभावें नेकुतन ॥
ज्याचे नासले मुस्वपन ॥ याच्या वाटे सर्वथा जान ॥ वासना न पवे
उदयाते ॥५०॥ जैसा सुर्येकरां तेजें नासता ॥ तो मृगजळेंकी जळबु
ध्दीन के मानितां ॥ तैसे सर्वब्रह्म नो देखतां ॥ तो ज्ञाय वासना नु
पजे तयातें ॥५१॥ एवं वासनेच्या निपरीसा ॥ केसी स्थीति नि
४ र्वाहीला गे ॥ ते आकुर्ति अनध्यान योगे ॥ फुटले श्लोकि रघोत्तमा ॥५२॥
श्लोक ॥ वासना संपरि त्यागाच्छीतं गच्छत्य चित्ततां ॥ प्राणस्पं
श्री दनिरोधाँय यथेछसी नथा कुरु ॥८॥ टिका ॥ ४

Joint project of the Rajwade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai

(3A)

वासनेच्या निपरीयागे॥आनि प्रानस्पंदे निरोध योग॥प्रान निरोध तो चिंने
मागे॥पुर्वप्रक निनिरोपीले॥५३॥चित्तपावेब्य चिंतेनू प्रत्ति॥हेच सागोवि
शद पुढति॥पुर्व स्वोकार्थ संगति॥ठाउ निनी गुप्ति बोलिजे॥५४॥सर्व
त्र ब्रह्मांव भासी॥वासना सहज न पडे यासी॥वासना लई प्रान नीरोधा
सी॥होता कोन भाया सु॥५५॥आनि प्रान निरोधा चिये प्राप्ती॥चित्त
पावेब्य चिंतत प्रति॥एवं वासने चि उपशांति॥तोचि निश्ची तिउपरमु ॥५६॥
सर्वत्र ब्रह्मा वभासु॥चित्त भावयेने चिरूपसु॥भासु सरे सेहा चि निरासु॥
चीत्तव त्तिचा बोलीजे॥५७॥तस्मात निसानिस विच्यार॥मी ब्रह्म सर्वे सेव्के
ले निर्धारे॥याउपरी विस्वाकार॥ब्रह्म चि होय भावित॥५८॥ब्रह्म सभा
विता विश्व मने दीसे॥विस्वाभावे ब्रह्म चि दीसे॥ब्रह्मावभासी वासना
ग्रासे॥वासना ग्रासी नुरे भासु॥५९॥ब्रह्मावभासु जे कां नुरे॥लेका
चित्ते चित्तवृत्ति विरे॥चित्तोपमाने तरे॥उरे सहज स्थीति निर्वान॥६०॥

Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai

सहजस्थीतिबानलीयावरी ॥ श्रीरामानुअवधारी ॥ होईलीला निग्रह
धारी ॥ करुनि नकुरी अवघे पने ॥ ६३ ॥ करीई छे सारी खेअनुवतेन ॥
मनोनिमुळी बोलीले वचन ॥ तरी प्रासयहे चिन्मान ॥ अविहीरन्ये लील
विग्रहे ॥ ६४ ॥ एवं मुळीचे निनिर्धारे वळे ॥ पद पावीजे ऐसे अमळ ॥
(५) या अध्यात्मविच्याराचे मुळ ॥ सत्संग आनि सत्स्यास्त्र ॥ ६३ ॥ श्लोक ॥ सा
धुसंगमसच्छास्त्र परोभवसौरामचत्त ॥ तदिने नैव [illegible] नो मासैः प्रा
मोषिपरमं पदं ॥ ८ ॥ टीका ॥ जो संसार भ्रांतिचा निगमु ॥ जो स्वानु
भुतिचा आगमु ॥ तो साधुचा समागमु ॥ आत्मप्रतिपादकशास्त्र ॥ ६४ ॥
याउभयाच्या गरें न सरायेन ॥ जरा तु होसी श्रीरामा पुनं ॥ तरी न लगे
दीवसमास व्यवधान ॥ तेने चि दीन सेनाकाळे ॥ ६५ ॥ मायाउल्लंघु
निवर्तति ॥ जेउहस्ट सद्युक्ती ॥ ते पावसीयथा निगुति ॥ नम नियेअर्थ
५ संषेयो ॥ ६६ ॥ जैमना दीकांहु निपरति ॥ व्यानिआत्मरूपाहु निव्यारुति ॥ ५
॥ संधीसीअसेनसति ॥ मनोनिस द्युक्तीहे नाम ॥ ६७ ॥

Rajwade Sanshodhan Mandal Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai

त्तिंप्रकारीतेसद्बुत्धी॥करीवासनेच्चिनिवृत्ति॥हेचिनिरोपीजेल पुढति॥
आगारघुपतीश्रवनकरी॥६८॥श्लोक॥असंगव्यवहारीत्वाद्भवभा
वनवर्जनात्॥शरीरनाशदर्शित्वात्वासनानप्रवर्तते॥१॥टीका॥देह
मनादिइंद्रयव्यवहारी॥वर्ततोनितयाचासंगुनधरी॥तेजानश्रीश
(5A) मानिर्धरी॥असंगव्यवहारीपै॥६९॥तेअसंगव्यवहारविचारना॥
करीतानाशहोयेमीमाझेपना॥येनेसहजचिनुपजेवासना॥हाप्र
कारसद्बुत्धीचा॥७०॥जेभावनंनेभवनाशु॥तेभावनेचेमुळरूपप्रकाशु॥
येनेविच्यारनाशु॥याजेभवभावनेचा॥७१॥जैसेमृगजळाचेमुळ॥
पाहतादेखीजेरविमंडळ॥मगतेसुर्यदर्शीमृगजळ॥नाहीहोयेसर्व
था॥७२॥तैसेस्वप्रकाशदृष्टिकरूनि॥होयभवभावनात्यजन॥तेनेवा
सनाउदयोनव्हेजान॥हादुसराप्रकारुसद्बुत्धीचा॥७३॥पृथग्भु
तेमाहाश्रुतिमीळेवानि॥तेहीअनुक्रमेचिळईपावानि॥मगसद्रूपा व
॥नीजभानि॥शरीरनासुअनुगमे॥७४॥

Joint project of the Rajwade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai

एवं शरीरं नाश दर्शिने। विशायसे सेकुनन स्मने॥ विशायन सत्ता वासने॥
उरीकैचि विचारी पा॥७५॥ हा तिसरा प्रकार सीतापत्ति। सांगनीरो
पीला नुजप्रति। ये ही प्रकारी संदुक्ती। करीनी नृ तिनासने चि॥७६॥ श्रीरा
मा परीयेसी। तु आशंका येथे स्नी धरीसी॥ जे असत्ता शरीराचे नासी॥
(5) सदस्नूकायेन नासे॥७७॥ संतो असत्ता सीच कृने॥ आ निअसत्ते संत
संतपन॥ येने परस्परे योगे। संत नाशनो। असंत संगे कायेन घडे॥७८॥
या अभीप्राय रघुकुळ टिळका। जरी तुज उपजेले आशंका॥ तरी
आकर्नि विचार नेटका॥ निरोपीजेल पुढीले श्लोकी॥७९॥ श्लोक॥ दृढ
भावानुसंधानात् विमुढा अपारा अवं॥ विपर्यय समस्तताममत्लं ६
६ विशानामपी॥ ॥ टीका॥ दृढ देहानुसंधाने। जरी असे विमुढपने॥
तरी देहाचे नाशने॥ नासोने ने सदु स्नु॥८०॥ अळंकाराचे निकांचन॥
किकांचनाचे नि अळंकारपन॥ परी अळंकार नासे करुन॥ सुवर्नेनो
॥ सुबोलो चिन ये॥८१॥

Samshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai

घगाचे निरूपम सीके सी ॥ आ नि मसके ने रूप घना सी ॥ परंतु घ अ
से नाशा सी ॥ नये निश्चया सी मृ यको ॥ ८२ ॥ जै से अ संता चे नि सं
ते प्रवृत्ति ॥ आ नि संताचे नि अ संत आ ल अ व्यक्तो ॥ परं तु अ संत लई
संत स्थीति ॥ नये नाशासी सर्वथा ॥ ८३ ॥ योग नरी असे संता संता ॥ ॥
(5A) परीस्वगुण नराकृति उभय ता ॥ अ संत न पवे संतता ॥ संत न होय
सता ॥ ८४ ॥ तरी असत भाव ... ॥ असंत पन नये सता ॥ अ
नी असती सत भाव मा निता ॥ उप सत न हे संत पे ॥ ८५ ॥ जैसी वि
शाच्या गाई अमृत भावना ॥ के री ता विज्ञान य अमृत पना ॥ अथ वा
अमृतीं कुरीला विज्ञा कल्पना ॥ नये विज्ञापना अमृता ॥ ८६ ॥ सन
नीती: संदेहे साचार ॥ आत्मा सत निर्वीकार ॥ हा चि नियानि य विचा
र ॥ हे चि साचार कळने याचे ॥ ८७ ॥ हा विचार जेथे ना ही ॥ ते त अ
ज्ञान बोली जे पा ही ॥ असत्ता याशारीराच्या गार ॥ सय भावना जे थे अ
से ॥ ८८ ॥

Joint project of the Rajwade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

स्वी भाव

स्लोकु ॥ सस्वभावेन दृश्योयं देहो देहो भवमलं ॥ दुःखु सस्वभावेन ॥
व्योमत्तांयाती देहनर ॥११॥ टीका ॥ देह देखा सस्वतें ॥ मनो निर्देही देहहो
य पुनर्वे ॥ तोचि देहहद्द खीन्ला असयवें ॥ तरी देह पावे व्योमला ॥४९॥
(6) तवं शरीराचे सस्य संजोडे ॥ तेने आत्मया देह संगुन घडे ॥ वस्तु गसा
पाहता न घडे ॥ आत्मया प्रतिभं स त संगु ॥५०॥ श्लोकु ॥ सुखं तल्ल
न्नतायेनस्वन्यदेहे नरिकु ते ठाकू ॥ परी भ्रमसी हे राम देह स्ले स्लीच्यु सं
प्रसी ॥१२॥ टीका ॥ आगोउवन थोरी श्रीरामा ॥ तो सुखस्वरूप तु आत्मा ॥
यातु जन्मप्रति शरीर महीमा ॥ सांप्रत कोठे काये कैंचा ॥५१॥ जे न श
रीरे येकु देसी ॥ हो उनि स्वप्र संसार देखसी ॥ संसारस्वप्न पटीभ्रमसी ॥ पृष्ठ
दशादिशा चिदैक्य ॥५२॥ ते शरीर तुजप्रति ॥ नसे सर्वात्मना निश्चिती ॥
८ तस्मात् ठाकु नियथी चिद्गह हरति ॥ आत्मस्थी तिरोहावे ॥५३॥ स्लो ८
क ॥ देहोह मीति संस्याज्य सर्वनाशे ब्युपस्थिते ॥ स्पष्टस्व्योन तु भव्यो
॥ नश्च मां सोने वृकसी ॥१३॥ टीका

पु

Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai, joint project

(6A)

देहाचि अहंकृति नाशे ॥ तो देह असता चि न दीसे ॥ देह न सत्ता असतां
उन से ॥ असता अंभावें नसे कोही ॥ १४ ॥ एवं देह अहंता या दुनी निवृत्ता ॥ स
वेनाश उपस्थीति असता ॥ स्वानुभवे कुरुनि पहंता ॥ ते येकाकी अनुग
मे ॥ १५ ॥ को ही न दीसे एनेप्रकासे ॥ उनेरीत प्रकाशत्तो आपन असे ॥ ते
ने स्वानुभवे स्पष्ट दिसे ॥ न दीसे ॥ निव्यापनो व्यापन ॥ १६ ॥ तेको मावळे
ते तो पमाति ॥ व्यापन आपना विश्रांति ॥ जैसी पुल्कसा चि स्थीति ॥ जेथे
तेथे स्वाश्रमु ॥ १७ ॥ ह्या सी आश्रमा चि या आशा ॥ प्रवर्त्ती नेलगे स
हसा ॥ याचे वर्ततनु के सरी सा ॥ अनंत असे समागमे ॥ १८ ॥ ते स्पष्ट
जो स्वानुभवस्थीति ॥ या समागमें असे विश्रांति ॥ जे की वर्ततन असे दे
हस्थीति ॥ तरी विश्रांतीते न सोडीत याज्ञे ॥ १९ ॥ जो विश्रांति सहीत देखे
नयनि ॥ विश्रांति सहीत आरके श्रवनि ॥ विश्रांति सहीत चाले चरनि ॥
एवं करीकरनि प्रयासेविन निश्चीत ॥ २० ॥ जै असे सशरीरा चि अंहह
ति ॥

"Joint project of Rajwade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai."

(७) ८ हे शाश्वती होये रघुपति ॥ तैं एवं विध उपजे विश्रांति ॥ प्रयासें विन
निश्चीत ॥ ७१ ॥ सो देहाकारू गेला कैसा ॥ तैसें मन सीं कैसें झा ॥ तरी
तोही प्रकारू आंजुळ ऐसा ॥ निरोपी लेलें पुढील श्लोकी ॥ ७२ ॥ श्लोक ॥
ब्रह्मैक्यं भावनयं साधो ॥ शांतस्ती गत व्यथः ॥ मनत्से सावहं भावः ॥
स्वयमेव वीनस्यति ॥ १४ ॥ टीका ॥ तें मन सीं संकेत समाने ॥ ब्रह्म
साक्षात्कार सद्गुरू वचनें ॥ होतां चि साधु जोत्तने ॥ तेथु निआ
पनापा हा वेग ॥ ७३ ॥ आपना तें पाहाजातां ॥ ब्रह्म चि भासे तत्वता ॥
ये ने विचारें दृढ स्थसुता ॥ घडे ब्रह्मैक्य भावना ॥ ७४ ॥ ब्रह्मैक्य
भावना करूनि ऐसी ॥ यानें शांती च्या सहासी ॥ शांत होतां तापा
सीं ये सी ॥ नीदें दुःखी स्ती राहावे ॥ ७५ ॥ तदनंतर तैं रघुराजा ॥ ८
हा देहाहं भाव तुझा ॥ गळे लया पे आपैसा ॥ संसार श्रीयां
धुमानि पां ॥ ७६ ॥ जैसा श्रोत्री याच्या बिजा गारी ॥ चांडाळ कहाव

Joint project of the Rajwade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

(७a)

स्वीनव्हरी ।। तैसे ब्रह्मैक्यव्यसत्ता येत्तरी । देहांकार न राहे ।। १०७ ।।
शांतिच्या निर्द्वंद प्रकारू । हा ब्रह्मैक्य भावनाचा परिवारू । आत्मा ते
नेसी नांदत्ता तो सुंदरू । देही अहंकारु न राहे ।। १०८ ।। तस्माद्ब्रह्मै
क्यभाव उसावे । देहांकारू लया पावे । याउपरी नवलाव संभवे
तो घन निद्राश्रवनं करी ।। १०९ ।। श्लोक ।। सर्वे तेक्यावबोधेनास्वस्थे
तः शीतलः सदा ।। निरहंकारो निराकांक्षो विशोदस्तदनंतरं ।। १५ ।।
टीका ।। ब्रह्मस्त्थान आत्मरत्नासी आले । ते नेब्रह्मात्मभावा ऐक्य के
ले । जैसा नेत्र रेजल पाहीले । तव जो उल्लेख भीनेव ।। ११० ।। विस्वपा
हो जाता दीसे आपन । आता न ब्रह्मपदी पुर्न । एवं ब्रह्मस्वरूप
चिद्घन । सदसदात्मक प्रपंचेसी ।। १११ ।। ऐसी स्थीती रेखलीया
नंतर । स्वस्थसी चळ होय अंतरं । ते कैसे तये कांग्र । आईके रा
यारघुपत्ति ।। ११२ ।। पाहा तो रेखलीया निभागे केवळ । न आपन ना
ब्रह्म सकळे । उरे गगनोपम निष्कळ । अहंस्फूर्तिचे यभा
वे ।। ११३ ।।

Joint project of the Rajwade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

लौ

सर्वत्रैक्यभावाचे स्फुरन ॥ हे चित्त घे अंहकार तिभान ॥ तिचे जालीया
उपशमन ॥ उरे निर्वान सहज पै ॥ ११४ ॥ करीता नुये प्रमान ॥ त्मनो नि
ग्रासीले स्फुरन ॥ स्फुरना भाव करून ॥ गगनोपम बोलीजे ॥ ११५ ॥
करीता नये प्रमान ॥ याला गीरीतेन सोडी स्फुरन ॥ सकळ स्फु
(8) रनेसीतें स्विपुर्न ॥ त्मनो नि[illegible]लीले सहज पै ॥ ११६ ॥ एवं सर्वत्रैक्य
बोधे साचार ॥ जो सघसीत[illegible] स्यांतर ॥ तो निरहंकार चित्त ह्नंतर ॥
आकाशाचे परी विशुद्ध ॥ ११७ ॥ श्लोक ॥ अंतःशीतलतायां तु लब्ध्या
यां शीतलं जगत् ॥ अंतस्तृष्णोपतप्तानां दावदाहमयं जगत् ॥ ११६ ॥
टीका ॥ तै सीबानलीया स्थीति ॥ अंतर पावे सीतळेत प्रति ॥ पावो
नियथा निगुति ॥ होय त्रीजगति सीतळ ॥ ११८ ॥ तस्मात् अंतरी
जो निवाला ॥ या प्रति विश्वाकार सीतळ जाला ॥ स्वनीजे विश्वस्फु
रनभाव निमाला ॥ आत्म स्फुरनाभावे ॥ ११९ ॥

Joint project of the Rajawade Samshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

(8A)

आनि जो सद्गुरुसी नेउ पेक्षीत ॥ देहाहंकार संयुक्त ॥ भेदभावनेकरू
नि खंडीत ॥ शरीरप्रमाण जाला असे ॥ १२० ॥ दृढ तर होउनि शरीरी ॥
च स्थावले त्यापलीआंतरी ॥ तेचि तितुका घोकारी ॥ आलाअनलो
कुन मी से ॥ १२१ ॥ तीकडे याहो जायद्रष्टी ॥ तीकडे संतत सचि
देखेश्न सी ॥ तृष्णा अनकाचे पोटी ॥ आहाळे न असे निरंतर ॥ १२२ ॥
याच्या अभीप्राय ऐसा ही से ॥ जे भावनेने विस्वभासे ॥ तनो नि
या प्रतिअसे ॥ जगदाकार दृश्य रूप ॥ १२३ ॥ याला गीजो अंतरीत
हमतम ॥ ह्या प्रति दावाग्नी निस्य जान ॥ आनिजो अंतरी निवालोनि
श्रीत ॥ या प्रतिसी तत्कउ जगदाकारू ॥ १२४ ॥ जे निर्वान सहज स्थीति ॥
ते चि सीतल तत्त्व चिनेत्री ॥ तिये चे साधन हे चि निश्चीती ॥ जे आत्मानु
संधान दृढ ॥ १२५ ॥ जे सुविनिरोपीले तुज अति ॥ बोधले न सेल तरी
सांगो पुढति ॥ वसीष्ठ म्हने रघुपति ॥ मंगळमुर्ति अवधारी ॥ १२६ ॥

Rajwade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

श्री मंत्रा नारायनां किंत ॥ माधव दास संता प्राथीत ॥ पुढीले प्र
के निविसीष्ट महत ॥ बोलेल ते परीसावे ॥१२७॥ उपनीशा म्हणु हा
कैल्य द्रुम ॥ जेथे आत्मानुभव फळ संभ्रम ॥ वसीष्ट हा चि विहंगम ॥
लो फळ स्वाद घेउ जाने ॥१२८॥ स्वाद घेउनि तृप्त जाला ॥ तो चि बोसे
ले निवाली रे आला ॥ जो मुमुक्षा पासुनी निघाला ॥ वसीष्ट रूप प्रका
(१) होपे ॥१२९॥ तेथीचा उचीष्ट भागु मज लागुनि ॥ प्राप्त नारायेन हर पे
करुनि ॥ मनो नियेन वसीष्ट निरोपणी ॥ जाला अधीकारी टीका मीसे ॥१३०॥
या नरी येनु भावार्थु असे ॥ भव दुःख भानु प्रकासे ॥ तेने मम हृदय
कमळ विकासे ॥ टीका स्फुरन जाले मसी ॥१३१॥ असो या येने वाचाळे
२० पने ॥ धीगीन अनुगमेल सने ॥ तरी आर्त्ताश्रोता बोलने ॥ पुढी
लक्षे से वसीष्टाचे ॥१३२॥ इति श्री योगवसीष्ट सार माधव दा २०
स सद्गुरु टीकायां नासनोपशमन पंचम प्रकर्नः समाप्त ॥५॥ छ ॥
म ध्या ॥ ध्रु ॥ ध्रु ॥ ध्रु ॥ ध्रु ॥ ध्रु ॥ ध्रु ॥ ध्रु ॥ ध्रु म ध्रु म

Rajwade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai, Joint Project

(१A)

श्रीगणेशायेनमः॥श्रीसरस्वतियेनमः॥श्रीगूरुसुतियेनमः॥श्रीज
गंनाथायेनमः॥गुरूवाक्यश्रवनेहोयेप्रकाशु॥तेनेप्रकाशेयन्ननविं
भासु॥मननविलासेनिजध्यासु॥योजेवेसातोसागु॥१॥श्लोक॥शुद्धो
निरंजनःशांतोबोधो॰हंप्रकृतेःपरः॥चेस्मानमीमेदेहंपश्यामन्यश
रिरवत्॥१॥टिका॥नसेउपाधीचेंआलंबनात्तोमीशुद्धनिरंजन॥मा
सागरेंवेस्वरूपशमन॥स्यनेनिर्मितांतरूपि॥२॥निजज्ञानापासुनि
वीकरेवृत्ती॥तोनेनिर्मीबोधरूपीसदा॥नातळेमेराभेदद्वंद्वा॥याला
गीप्रकृतितुनिपर॥३॥मीस्वशरीराचाचेष्टवित्ता॥परीशरीरीराचिन
येअहंममता॥देखनाहोयेनिरूता॥अन्येशरीराचेपरी॥४॥श्लोक॥ग
एतेहीचिद्विलासांतामनोबुद्धीद्रियादयः॥असंतएवसर्वेहीअव
धानंविनाखिलः॥२॥टीका॥देहेंद्रीयप्रानमपा॥बुद्धिचितअहंका
रगुण॥महतत्वमायादिकरूण॥हेपहापुंजितुवेकांहीं॥६॥

स्व

Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

असे चिद्वीलासु याचा अंति ॥ म्हणोनि चिद्विलासा न बोलीजे ति ॥ असो
हे समस्त पदार्थ निश्चिति ॥ होवोनि गमति असता ॥ ६ ॥ मी पाहे आपना अ
पुन ॥ नव स्वयें चि चिद्वीलास पुर्नं ॥ तेणेंची द्वीलासें अवसाने ॥ सहजे
१ हाय पदार्थाचें ॥ ७ ॥ यवं आपुलीये संतेश्रुतिति ॥ हे पदार्थ असंते भास
तिं ॥ असो निश्चि नाहीं होतिं ॥ केंकें रें रघुपती आश्चियें ॥ ८ ॥ ज्याचेनि विशे १
(१०) याचे गुरुनु ॥ जेव्यजउतें मनियें मानें ॥ ते चि पावले जउपने ॥ म्हणोनि निवाट
ले जाश्चियें ॥ ९ ॥ न स्मान्मे नेबुध्या रिसाचो कार ॥ ज्याचेनि केरी तिवे
न हार ॥ तो मी स्वप्रकाश साचार ॥ म्हणोनि निःसार केउरली ॥ १० ॥ स्त्रो
रु ॥ आपधेचलें चितें स्मीजगन्मित्र नेवेसंपदी ॥ भावा भावें घुनेवास्ती
तें नजीवा म्यनामयें ॥ ११ ॥ टिका ॥ जगासी अरीरूप आपदा ॥ आनि मीत्र
रूप संपदा ॥ ये द्वंद्वो पले विहइ विशा दाग ने घेउं अचलें चित्त जो मी ॥ अ
सुखदुःखानें मानिनें जेमन ॥ याहुनि मी असविलेसनं ॥ यालागी आपदी
॥ केरुन ॥ सुखदुःखबाधु न लगे मज ॥ १२ ॥

मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे

राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)

दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८

Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com